भगवद् गीता का ज्ञान – (5)

" सन्यास श्रेष्ठ है या कर्म-योग ? "

श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के 5वें अध्याय के प्रारम्भ में अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण से पूछते हैं कि कर्म-सन्यास (कर्मों को तिलाञ्जलि देना) और कर्म-योग (निष्काम भाव से कर्म करना) -- इन दोनों में से कौन सा साधन कल्याणकारी है ? **(गीता – 5:1)**

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं --

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ। तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥५:२॥

अर्थात - कर्म-सन्यास और कर्म-योग, दोनों ही परम कल्याणकारी हैं, परन्तु साधन की सुगमता के कारण इन दोनों में कर्म-योग अधिक श्रेष्ठ है। **(गीता – 5:2)**

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः। एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥५:४॥

अर्थात - मूर्ख लोग ही सन्यास और कर्म-योग को अलग-अलग फल देने वाले बताते हैं, विद्वान लोग ऐसा नहीं कहते हैं; क्योंकि दोनों में से किसी एक साधन में भी स्थित मनुष्य इसके फल-स्वरूप परमात्मा को प्राप्त होता है। (गीता – 5:4)

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः। योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥५:६॥

अर्थात - कर्म-योग के बिना सन्यास की सिद्धि (जिसका अर्थ है -- मन, इन्द्रिय और शरीर द्वारा होने वाले कर्मों में कर्तापन का त्याग होना) कठिन है, जबकि मनन-शील कर्म-योगी परब्रह्म परमात्मा को शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है। **(गीता – 5:6)**

सारांश में –

सन्यास और कर्म-योग दोनों ही परम कल्याणकारी हैं, क्योंकि दोनों में से किसी एक साधन में भी स्थित होकर मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो सकता है।

परन्तु सन्यास की सिद्धि कठिन है, जबकि कर्म-योग सुगम है।